गुढीपाडवा की मेरी कहानी

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

मंगलवार, २४ मार्च, २०२०

[भारत में २५ मार्च, २०२०]

कुछ वर्ष पहले, मैंने महाराष्ट्र राज्य के पुणे शहर में गुढीपाडवा का त्यौहार मनाया। हाँलाकि मैं दुनिया के इस ओर, अमरीका में पली-बढ़ी हूँ, हमारे कई नाते-रिश्तेदार पुणे में रहते हैं। मैं पहली बार भारत में यह त्यौहार मना रही थी; देश के कई भागों में [महाराष्ट्र और साथ ही आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक और मणिपुर, इन राज्यों में भी] लोग इस दिन को अपने सुखद नूतन वर्ष के रूप में मनाते हैं।

मुझे याद है उस दिन सुबह की धूप में मृदुलता थी और उसकी किरणें हमारे घर में अपना प्रकाश बिखेर रही थीं। मेरी दादी जी छत पर बैठीं एक मोटे-से धागे में नीम के पत्तों और गेन्दे के फूलों को बारी-बारी से पिरोकर माला बना रही थीं। जब मैं उनके पास पहुँची तो उन्होंने मेरी ओर एक कटोरा बढ़ाया जिसमें कुछ था। उनकी भौंहें तनी हुई थीं; उन्हें सन्देह था कि मैं उनका यह निमन्त्रण स्वीकार करूँगी या नहीं।

“यह क्या है?” मैंने पूछा।

“कडुनिम्ब,” उन्होंने उत्तर दिया—यानी नीम।

मैंने कटोरे में से एक पत्ती उठाई और उसका किनारा चबाया। तुरन्त ही मेरा मुँह बन गया; मैंने अपनी आँखें भींच लीं क्योंकि मराठी भाषा के शब्द ‘कडुनिम्ब’ में ‘कडू’ का अर्थ ही है “कड़वा।” इसके तुरन्त बाद, मेरी दादी जी ने मुझे कुछ मीठा खाने के लिए दिया—गुड़ के कुछ टुकड़े या शायद शक्कर। यह गुढीपाडवा पर निभाई जाने वाली एक रीत है, एक परम्परा है—जिसमें पहले कुछ कड़वा और उसके बाद या उसके साथ कुछ मीठा खाया जाता है। आयुर्वेद की दृष्टि से, नीम खाने के कई सारे स्वास्थ्यवर्धक लाभ हैं; यह रक्तशुद्धि करता है, रोगप्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाता है और यह पूरे शरीर को शुद्ध कर इसे पोषित करता है। प्रतीकात्मक दृष्टिकोण से कहें तो नीम और शक्कर खाना इस बात का स्मरण कराता है की कैसे जीवन अपने आप में कड़वे और मीठे का मिश्रण है, यह उतार-चढ़ावों का, सुख-दुःख का मेल है।

पहले कुछ कड़वा और फिर कुछ मीठा खाने की इस परम्परा ने मुझे मन्त्रमुग्ध कर दिया, क्योंकि यह इस बात का बिलकुल सटीक और बहुत-ही सुन्दर दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है कि नई शुरुआत क्या है। हाँ, निस्सन्देह यह समय है, नए सिरे से शुरुआत करने का, नए संकल्प बनाने का, प्रतीकात्मक रूप से कहें तो मन की स्लेट को साफ़ करने का अर्थात् पिछली सभी अनावश्यक बातों को मिटाकर नई शुरुआत करने का। परन्तु हम यह सब अपनी आँखें खुली रखते हुए करते हैं, इस समझ के साथ करते हैं कि आने वाला वर्ष हमारे लिए सुख *और* दुःख दोनों ही लाएगा—और किस अनुपात में, यह हम नहीं जानते। बस हम नहीं जानते। अधिकांशतः, यह एक अनजान रास्ता है जिस पर हम यहाँ चल रहे हैं। इसलिए हमारे संकल्प, हमारे दृढ़-निश्चय, नई शुरुआत के हमारे महोत्सव, सच को नकार नहीं सकते; बल्कि, ये इस बात का स्मरण कराते हैं कि हमारी परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, हम सदैव अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने का चुनाव कर सकते हैं। हम सदैव यह चुन सकते हैं कि हम अपना कर्म सत्यनिष्ठा के साथ, दयालुता के साथ, सद्‌गुणों के साथ करें।

नीम और शक्कर खाने की इस परम्परा से मुझे और भी एक छवि याद आती है जिसका प्रतीकात्मक महत्त्व है—गुलाब और उसके साथ लगे काँटों की छवी। अगर गुलाब में काँटे न होते तो क्या हम उसकी सुन्दरता की, उसकी खुशबू की इतनी सराहना कर पाते? गुलाब को हाथ में लेते समय स्वाभाविक रूप से हमारे अन्दर उसके लिए एक तरह का आदरभाव आ जाता है; हम उसे ध्यान से पकड़ते हैं क्योंकि हम नहीं चाहते कि उसके काँटे हमारी उँगलियों में चुभें। जीवन के प्रति भी हमारा रवैया ऐसा ही होता है। हम अनुशासन का पालन करना चाहते हैं क्योंकि हम अपने आपको दुःख और कष्टों से बचाना चाहते हैं। यदि हमें पीड़ाओं की चिन्ता न होती, यदि हम अपने कर्मों के फल के प्रति सतर्क न होते तो क्या हम *सचमुच* उन सब चीजों का पालन करने के लिए बाध्य होते जो हमें इस संसार में जीवन जीने के लिए करनी चाहिए और जो हमें नहीं करनी चाहिए?

ऐतिहासिक और शास्त्रीय दृष्टिकोण से बात करें तो गुढीपाडवा भगवान राम के राज्याभिषेक के उपलक्ष्य में मनाया जाता है; भगवान राम अपनी प्रिय अर्धांगिनी, सुन्दर व सुशील सीता जी और अपने निष्ठावान व पराक्रमी अनुज, लक्ष्मण के साथ दारुण कष्टों से भरा चौदह वर्ष लम्बा वनवास काटकर अयोध्या वापस लौटे और अयोध्या के महाराज के रूप में इस दिन उनका राज्याभिषेक हुआ था। इसी कारण लोग गुढीपाडवा के दिन अपने घर के मुख्य-द्वार पर या खिड़कियों पर गुढी स्थापित करते हैं। गुढी विजय का प्रतीक है, बुराई पर अच्छाई की विजय, अज्ञान पर ज्ञान की विजय, यह विश्व के पुनः सही दिशा में अग्रसर होने का प्रतीक है।

हिन्दू पञ्चांग के अनुसार, गुढीपाडवा चैत्र माह के शुक्लपक्ष का पहला दिन है [जो ग्रैगोरियन कैलेन्डर के अनुसार मार्च या अप्रैल में पड़ता है।] पाडवा शब्द संस्कृत शब्द प्रतिपदा से आता है, जो शुक्लपक्ष या कृष्णपक्ष के प्रथम दिवस को दर्शाता है। गुढीपाडवा को वर्ष के साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से एक माना जाता है।

हाँलाकि महाराष्ट्र में हर परिवार का गुढीपाडवा मनाने का तरीक़ा थोड़ा अलग है, फिर भी ऐसी कई सारी परम्पराएँ हैं जिनका पालन मूलतः सभी लोग करते हैं। नीम और गुड़ या शक्कर खाना उनमें से एक है। कई बार तो शक्कर 'गाठी' के रूप में आती है; 'गाठी' एक माला होती है जिसमें शक्कर को अलग-अलग सुन्दर आकारों में ढालकर, उन्हें धागे में पिरोया जाता है। [हाँ, भारत के लोग बहुत रचनात्मक हैं। यहाँ शक्कर भी विशेष रूपाकारों में मिलती है।]

हर एक परिवार गुढी की स्थापना करता है। गुढी में वे चीज़ें होती हैं जो घर के आस-पास ही मिल जाती हैं जैसे बाँस [लकड़ी का डण्डा]; रेशम की साड़ी या रेशम का कपड़ा जो बाँस के एक सिरे से बाँधा जाता है, और उस पर ताँबे या चाँदी का लोटा उलटा करके रख दिया जाता है। गुढी पर नीम और गेन्दे के फूलों से बनी मालाएँ चढ़ाई जाती हैं जैसी की मेरी दादी जी ने बनाई थी और इसके साथ ही 'गाठी' भी चढ़ाई जाती है। घर में आने वाले लोगों का स्वागत करने हेतु घर के मुख्य-द्वार को नीम और गेन्दे की मालाओं या 'तोरण' से भी सजाया जाता है। इस तरह सजाए गए घर में बात ही कुछ ऐसी होती है जो अत्यन्त मधुर और उत्थानकारी होती है; और जब आप इस सजावट को देखते हैं तब मन की बस यही इच्छा होती है कि वह इस उत्सव का आनन्द मनाए।

गुढी की स्थापना करने के बाद हल्दी, कुमकुम और फूलों से इसकी पूजा की जाती है। और फिर समय होता है स्वादिष्ट व्यंजनों का। गुढीपाडवा का पारम्परिक भोजन है 'श्रीखण्ड-पूरी'— सुगन्धित मीठा दही जिसमें केसर और पिस्ता पड़ा होता है यानी श्रीखण्ड; गरमागरम तली गईं, फूली-फूली पूरियाँ; और साथ ही अनेक प्रकार की सब्ज़ियाँ या भाजी और दाल। गुढीपाडवा पर पूरे राज्य में छुट्टी होती है इसलिए सभी के पास पूरे दिन घर पर रहने का, साथ मिलकर खाने का, महोत्सव मनाने का और मिल-जुलकर टेलिविज़न देखने का अवसर होता है [मराठी भाषा के चैनल्स् पर, लगभग हर एक सीरियल में गुढीपाडवा का विशेष भाग प्रस्तुत किया जाता है, इन टी-वी सीरियल की भावनात्मक कहानियों में गुँथा होता है किरदारों द्वारा गुढी सजाना और पूजा करना]। लोग एक-दूसरे को अपनी नववर्ष की योजनाओं के बारे में बताते हैं कि वे इस नए शुभारम्भ के उपलक्ष्य में क्या करना चाहते हैं।

आमतौर पर इस दिन महत्त्वपूर्ण चीज़ें ख़रीदी जाती हैं जैसे कि नया घर या कार, या बैंक में नया खाता खोला जाता है।

हाँलाकि गुढीपाडवा को महाराष्ट्र में मनाए जाने वाले त्यौहार के रूप में माना जाता है, तथापि भारत के अन्य भागों में भी कई लोग इस दिन का उत्सव दूसरे नाम से मनाते हैं। आन्ध्रप्रदेश में इस पर्व को 'उगादी', कर्नाटक में 'युगादी', और मणिपुर में 'सजीबु नोन्गमा पानबा चिरोबा' के नाम से जाना जाता है। महाराष्ट्र की ही तरह, इन भागों के लोग भी अपने-अपने रीति-रिवाजों व परम्पराओं के अनुसार और विशेष भोजन बनाकर यह महोत्सव मनाते हैं, फिर भी इसके पीछे भावना एक ही है; और वह है नववर्ष की। यह नववर्ष है। एक नई शुरुआत है। जो इस पर्व को इसी दृष्टिकोण से देखते हैं, उनके लिए यह एक नया संसार है।

गुढीपाडवा मनाने की मेरी सबसे मीठी याद वह है जब एक बार मैं इस पर्व पर पुणे की सड़क पर चल रही थी। हर दरवाज़े पर या फिर बाल्कनी की खिड़की पर गुढी सजी हुई थी। पूरी सड़क इन ध्वजों से सुसज्जित थी, हवा में लहराती रंग-बिरंगे रेशम की पट्टियों से ऐसी सजी थी मानो भगवान राम, माता सीता, अनुज लक्ष्मण, वीर हनुमान और पूरी वानरसेना के साथ वहाँ किसी-भी क्षण पधारेंगे। हाँ, यह सचमुच किसी राज्याभिषेक जैसा ही लग रहा था, किसी नई चीज़ के अभिषेक जैसा, उस नई चीज़ के आगमन पर राज-तिलक जैसा। किसके—यह बताना कठिन है। ऐसा लग रहा था कि यह हर एक को खुद ही तय करना होगा।

इस वर्ष, २०२० में विश्वभर के लोग अपने आपको सुरक्षित रखने की और दूसरे लोगों को सुरक्षित रखने की अपनी ज़िम्मेदारी की ओर ध्यान दे रहे हैं। वे अपने आपको स्वच्छता के महत्त्व के बारे में याद दिला रहे हैं और दूसरे लोगों को भी ऐसा करने के लिए उनकी मदद कर रहे हैं। इसलिए मुझे लगता है कि भले ही लोग बड़ी संख्या में त्यौहार मनाने के लिए इकट्ठा न हो पा रहे हों, फिर भी सभी को महसूस हो रहा है—*आप सबको* भी महसूस हो रहा है—जोश और उत्साह से भरा गुढीपाडवा का भाव।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।